GLOBAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY STUDIES ISSN: - 2348-0459
www.gjms.co.in
Volume-5, Issue-8, July- 2016 Impact Factor: 2.389

शिक्षा में बौद्ध दर्शन की उपयोगिता

डॉ. आशा पारे

सहायक प्राध्यापक

बारडोली शिक्षण महाविद्यालय, कटनी

सारांश

बौद्ध दर्शन गौतम बुद्ध द्वारा शुरू हुआ। गौतम एक राजपुत्र थे जो युवा जीवन आरम्भ में ही वैराग्य ले लिये और 29 वर्ष की आयु ही में राज्य, स्त्री, पुत्र, परिवार को त्याग कर दुखनाश के मार्ग व ज्ञान की खोज में लगे और अन्ततः सिद्धि प्राप्त किए।

बौद्ध शिक्षा दर्शन एवं शिक्षा के उद्देश्य

चार आर्य सत्य 1. दुख, 2. दुख का कारण, 3. दुख का निरोध, 4. दुख के निरोध का उपाय।

बौद्ध धर्म और अष्टांगिक मार्ग– सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वाचा, सम्यक् कर्मान्त, सम्यक् आजीव, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति, सम्यक् समाधि,.

बौद्ध धर्म और प्रतीत्य समुत्पाद, 4. बौद्ध धर्म और कर्मवाद,5. बौद्ध धर्म और बोधिसत्व

बौद्ध शिक्षा दर्शन एवं शिक्षण विधि–1. उपदेश या प्रवचन विधि, 2. व्याख्या विधि, 3. चर्चा या संगोष्ठी विधि, 4. शास्त्रार्थ विधि, 5. पुनरावृत्ति और स्मरण–धारण की विधि, 6. निदिध्यासन की विधि, 7. सम्यक् समाधि की विधि, 8. व्यावहारिक अभ्यास की विधि, 9. भ्रमण, निरीक्षण, दीक्षा विधि

बौद्ध शिक्षा दर्शन एवं पाठ्यक्रम –बौद्ध दर्शन के अनुसार बालक को भौतिक और आलौकिक पाठयक्रम् का ज्ञान कराना आवश्यक है।

बौद्ध शिक्षा दर्शन एवं अनुशासन, बौद्ध दर्शन नैतिक अनुशासन का दर्शन है।

बौद्ध शिक्षा दर्शन एवं अध्यापक–बौद्ध शिक्षा दर्शन में शिक्षक को एक मार्गदर्शक माना गया है।

बौद्ध शिक्षा दर्शन एवं विद्यार्थी–बौद्ध दर्शन में विद्यार्थी का जीवन अनेकों सीमाओं में बंधा है जिसका प्रवेश उपनयन संस्कार के बाद हुआ है।

बौद्ध शिक्षा दर्शन एवं विद्यालय –महात्मा बुद्ध ने तो पेड़ों के नीचे रहकर शिक्षा दी थी परन्तु उनके शिष्यों ने मठों, विहारों, संघों में शिक्षा दी।

बौद्ध शिक्षा दर्शन एवं शैक्षिक प्रशासन–शिक्षा पर बौद्ध धर्म के प्रचारकों का ही प्रशासन था। बौद्ध धर्म केगुरू ही अपने अनुसार मठों में शिक्षा की व्यवस्था करते थे और उन्हीं के अनुशासन, विषय, उद्देश्य, अनुशासन को रखा जाता था।

बौद्ध दर्शन करूणा के सागर भगवान बुद्ध के प्रयासों द्वारा शुरू हुआ। भगवान बुद्ध एक राजपुत्र थे जो युवा जीवन आरम्भ में ही सत्य की खोज के लिए निकले और 29 वर्ष की आयु में ही राज्य, स्त्री, पुत्र व परिवार को त्याग कर दुखनाश के मार्ग, सत्य व ज्ञान की खोज में लगे और अन्ततः उन्होंने सिद्धि प्राप्त की। तदुपरान्त जो कुछ उपदेश दिए वही उनका दर्शन हुआ। गौतम 'ज्ञान से प्रकाशित' होने पर बुद्ध कहे गए और बुद्ध का दर्शन बना। प्रो0 हिरियाना लिखते हैं कि ''बुद्ध ने केवल दुख–दोष दूर करने के लिये जो कुछ आवश्यक था उसी की शिक्षा दी, उनके अनुसार जिसका प्रसार जीवन की मुख्य विशेषता थी।''

(1) मनुष्य की सद्गति व दुर्गति उसके अपने कर्मों के द्वारा ही होती है। अतः बौद्ध धर्म में कर्म प्रधान सिद्धान्त को महत्व दिया जाता है। (2) भगवान बुद्ध के अनुसार जीवन में पंचशील अनिवार्य है। यह पंचशील– अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य तथा मादक द्रव्यों का असेवन।(3) बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों में शास्त्रों का व्यापार, प्राणी का व्यापार, माँस का व्यापार, विष का व्यापार तथा मद्य का व्यापार वर्जनीय माना

गया है। (4) जीविका में रिश्वत, वंचना तथा कृतघ्नता को निषेध माना गया है। (5) मनुष्य को बुरी भावनाओं को अपने अन्दर आने से रोकना चाहिए। सभी प्राणियों के परम् हित हेतु एक बुद्ध विचारधारा बनायी जानी चाहिए। (1) बौद्ध शिक्षा में धर्म का प्रचार व प्रसार किया जाता है। प्रारम्भ में इस शिक्षा का उद्भव इसी उद्देश्य से हुआ। (2) बालक में सत्य व अहिंसा मूल्यों हेतु शिक्षा को सक्षम माना जाता था। मानव कल्याण हेतु यह मूल्य अनिवार्य हैं।(3) बोधिसत्व प्राप्ति हेतु चिन्तन व मनन प्रमुख हथियार माने जाते हैं। अतः यह शैक्षिक पाठ्यक्रम छात्रों हेतु इस प्रकार रखे जाते हैं, कि छात्र रूचि लें।(4) छात्रों में धार्मिक व आध्यात्मिक शिक्षा द्वारा उच्च आदर्शों का समावेश करना।(5) वैदिक काल की भॉति उस काल में भी बौद्ध शिक्षा व्यवस्था में शिष्य व शिक्षक के स्नेहपूर्ण सम्बन्ध होते थे।(6) गुरु व शिष्य दोनों हेतु आचार संहिता होती थी। इनके उल्लंघन करने पर दण्ड दिया जाता था जो कि संघ देता था।

❖ बौद्ध शिक्षा दर्शन एवं शिक्षा के उद्देश्य

महात्मा बुद्ध ने संसार को दुःखों से मुक्त करने हेतु जो उपदेश दिये उनमें निहित शिक्षा के लक्ष्य व उद्देश्य इस प्रकार है :

1. चार आर्य सत्य–यह निम्न हैं1. दुख, 2. दुख का कारण, 3. दुख का निरोध, 4. दुख के निरोध का उपाय।

2. बौद्ध धर्म और अष्टांगिक मार्ग

- **सम्यक् दृष्टि :** अविद्या के कारण संसार तथा आत्मा के सम्बन्ध में मिथ्या दृष्टि उत्पन्न होती है, जैसे आत्मा अमर है, संसार सत्य है आदि। हम अनित्य, दुःखमय और अनात्म वस्तु को नित्य समझने लगते हैं। इस स्वरूप पर ध्यान रखने को सम्यक् दृष्टि कहते हैं।
- **सम्यक् संकल्प–** कामोपभोग में बुद्ध न होने, औरों के साथ पूर्ण मैत्री करने और दूसरों के सुख–संतोष में वृद्धि करने का शुद्ध संकल्प मन में रखना उचित है।
- **सम्यक् वाचा–** असत्य भाषण, चुगली, गाली, बकबक आदि असत वाणी के कारण समाज का संगठन बिखर जाता है, और झगड़े खड़े होकर वे हिंसा का कारण बनते हैं।
- **सम्यक् कर्मान्त–** प्राण–घात, चोरी, व्याभिचार आदि कर्म काया के द्वारा हों जायें तो उससे समाज में बड़े अनर्थ होंगे।
- **सम्यक् आजीव–** सम्यक् आजीव का अर्थ है अपनी जीविका इस प्रकार चलाना जिससे समाज को हानि न पहुंचे।
- **सम्यक् व्यायाम–** जो बुरे विचार मन में न आये हों उन्हें मन में आने के लिए अवसर न देना, जो बुरे विचार मन में आये हों उनका नाश करना।
- **सम्यक् स्मृति–**शरीर अपवित्र पदार्थों का बना हुआ है, यह विवेक जागृत रखना, शरीर की सुख–दुःख आदि वेदनाओं का बार–बार अवलोकन करना, विचार करना–यही सम्यक् स्मृति है।
- **सम्यक् समाधि–**अपने मृत शरीर पर, मैत्री, करूणा,तपआदि पदार्थोंपर चित्त एकाग्र करके चार ध्यानों का सम्पादन करना ही सम्यक् समाधि है।

3. बौद्ध धर्म और प्रतीत्य समुत्पाद

बौद्धधर्म का दार्शनिक सिद्धांतों में प्रतीत्य समुत्पाद का प्रमुख स्थान है। प्रतीत्य समुत्पाद का तात्पर्य दुःख समुदाय से है। प्रतीत्य समुत्पाद कारण और प्रभाव की ओर अन्तों का संकेत करता है।

4. बौद्ध धर्म और कर्मवाद

भगवान बुद्ध के अनुसार पाप और पुण्य व्यक्ति के कर्म का ही फल होता है। पाप करने वाला इस लोक और परलोक दोनों में दुःख भोगता है और पुण्यात्मा को दोनों लोकों में सुख मिलता है।

5. बौद्ध धर्म और बोधिसत्व

बोधिसत्वों को प्राप्त करना ही बौद्ध धर्म का प्रमुख उद्देश्य है यह स्थिति किसी भी मनुष्य के लिये सर्वोच्च आदर्श है।

❖ बौद्ध शिक्षा दर्शन एवं शिक्षण विधि

महात्मा बुद्ध ने अपने शिष्यों को और उनके शिष्यों ने अन्य लोगों को धर्म–ज्ञान का उपदेश या प्रवचन दिया। इस प्रकार

शिक्षण की विभिन्न विधियों का प्रयोग हुआ जिनका विवरण नीचे दिया जा रहा है–

1. **उपदेश या प्रचवन विधि–** शिक्षा की यह प्राचीन विधि है और बौद्ध धर्म प्रचारकों ने इस विधि का प्रयोग खूब किया है।
2. **व्याख्या विधि –** शिक्षण की दूसरी विधि है व्याख्या विधि जिसमें अध्यापक छात्रों के समक्ष अज्ञात वस्तु का स्पष्टीकरण तर्क पूर्ण ढंग से करता है।
3. **चर्चा या संगोष्ठी विधि–** चर्चा या संगोष्ठी विधि का भी प्रयोग बौद्ध शिक्षा में पाया जाता था।
4. **शास्त्रार्थ विधि –** प्रश्नोत्तर द्वारा शास्त्रार्थ विधि का प्रयोग, बौद्ध संघों या मठों में होता था।
5. **पुनरावृत्ति और स्मरण–धारण की विधि–** बौद्ध शिक्षा के क्षेत्र में छात्रों के द्वारा पुनरावृत्ति, कंठस्थीकरण, स्मरण, धारण करने का प्रयत्न होता रहा।
6. **निदिध्यासन की विधि–** प्राचीन परम्परा के अनुसरण में बौद्ध कालीन शिक्षा में भी निदिध्यासन विधि प्रयुक्त हुई।
7. **सम्यक् समाधि की विधि–** बौद्ध शिक्षा की यह विधि अपनी देन है। वस्तुतः यह स्वाध्याय एवं आत्म बोध की विधि कही जा सकती है।
8. **व्यावहारिक अभ्यास की विधि–** कला, कौशल, उद्योग धंधों का ज्ञान व्यावहारिक अभ्यास की विधि से दिया जाता था।
9. **भ्रमण, निरीक्षण, दीक्षा विधि–** बौद्ध भिक्षुओं के द्वारा इस विधि का प्रयोग प्रायः होता था।
10.

❖ बौद्ध शिक्षा दर्शन एवं पाठ्यक्रम

बौद्ध दर्शन के अनुसार वास्तविक शिक्षा वह है जो मनुष्य को निर्वाण की प्राप्ति कराये। आचार्य बलदेव उपाध्याय ने बौद्ध शिक्षा का उद्देश्य बताते हुए कहा है 'बुद्ध किसी भी तथ्य को विश्वास की कच्ची नींव पर रखना नहीं चाहते थे, प्रत्युत तर्कबुद्धि की कसौटी पर सब तत्वों को कसना बुद्ध की शिक्षा का प्रधान उद्देश्य था।

बौद्ध दर्शन के अनुसार भी शिक्षा को दो भागों में विभाजित किया गया है। 1. आध्यात्मिक शिक्षा, 2. लौकिक शिक्षा और उसी के अनुरूप पाठ्यक्रम की विवेचना की गयी है। जिसमें गणित, पंचविद्या, चिकित्सा, हेतु विद्या, अध्यात्म, भाषा, धर्म, राजनीति, न्याय, प्रशासन, ज्योतिष आदि रखे गये।

❖ बौद्ध शिक्षा दर्शन एवं अनुशासन

बौद्ध दर्शन नैतिक अनुशासन का दर्शन है। बौद्ध दर्शन के अनुसार जीवन में छात्र, अध्यापक, समाज के लोगों एवं भिक्षु सभी को अनुशासन का पालन करना चाहिये तथा शुभ–अशुभ का विवेकपूर्ण विचार कर कार्य करना चाहिये।

❖ बौद्ध शिक्षा दर्शन एवं अध्यापक

'बोधिपथ–प्रदीप' कहा गया है कि शिक्षक उस नाविक के समान है जो स्वयं नदी पार करने के साथ ही दूसरों को भी पार कराता है। उनसे द्वारा निर्दिष्ट मार्ग पर तुम्हें स्वयं ही चलना है' इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि शिक्षक एक मार्गदर्शक है।'विनयपिटक' में योग्य विनयधर के लक्षण को बताते हुए कहा गया है।

❖ बौद्ध शिक्षा दर्शन एवं विद्यार्थी

बौद्ध शिक्षा दर्शन में बालक के शिक्षाध्ययन का समय 8 वर्ष की आयु में बताया गया है। शिक्षा का प्रारम्भ उपनयन संस्कार के पश्चात् किया जाता था। प्रत्येक छात्र अपने कुल के अनुरूप शिक्षा ग्रहण करने हेतु सहस्त्रों मंगल कर्मों के साथ शिक्षालय में प्रवेश करता था। शिक्षा प्रारम्भ के अवसर पर विद्यार्थियों को सर्वप्रथम भोज्य एवं खाद्य पदार्थों के अतिरिक्त बहुमूल्य पदार्थ तथा चांदी सोना भी दान में दिया जाता था।

❖ बौद्ध शिक्षा दर्शन एवं विद्यालय

बौद्ध काल में शिक्षा की सुव्यवस्था की गई थी और इस काल में विद्यालय विश्वविद्यालय या परिवार शिक्षा–केन्द्र बन गए थे। महात्मा बुद्ध ने तो पेड़ों के नीचे रहकर शिक्षा दी थी परन्तु उनके शिष्यों ने मठों, विहारों, संघों में शिक्षा दी। इन्हें ही 'विद्यालय' कह सकते हैं। बौद्धकाल में कई विद्यालय प्रसिद्ध थे जैसे नालन्दा, तक्षशिला आदि।

❖ **बौद्ध शिक्षा दर्शन एवं शैक्षिक प्रशासन**

बौद्ध शिक्षा मठों में प्रदान की जाती थी और मठों में ही गुरू तथा शिष्य साथ–साथ रहते थे। शिष्य भिक्षा माँग कर लाते थे और अपने तथा अपने गुरूओं के भोजन की व्यवस्था करते थे। शिक्षा पर बौद्ध धर्म के प्रचारकों का ही प्रशासन था। बौद्ध धर्म के गुरू ही अपने अनुसार मठों में शिक्षा की व्यवस्था करते थे और उन्हीं के अनुसार विषय, पाठ्यक्रम, उद्देश्य व अनुशासन को रखा जाता था।

निष्कर्ष –

1. भगवान महात्मा बुद्ध ने ''संतोष परम् सुखम्'' को महत्व दिया है।
2. बौद्ध काल में सभी वर्गों के लिए शिक्षा की व्यवस्था थी।
3. बौद्ध दर्शन में शिक्षा का आरम्भ उपनयन संस्कार से होता है।
4. बौद्ध शिक्षा दर्शन में विद्यार्थी के लिए अष्टांगिक मार्ग को महत्व प्रदान किया गया है।
5. बौद्ध शिक्षा दर्शन में अध्यापक को मार्गदर्शक माना गया है।
6. बौद्ध शिक्षा दर्शन विद्यार्थी जीवन के लिए बहुत कठिन काल माना जाता था।
7. बौद्ध शिक्षा दर्शन विद्यार्थी की अपेक्षा शिक्षक को अधिक महत्व प्रदान करता है।
8. बौद्ध शिक्षा दर्शन बालक को लौकिक और आलोकिक पाठ्यक्रम अपनाने पर बल देता है।
9. बौद्ध शिक्षा दर्शन संगोष्ठी, व्याख्या, शास्त्रार्थ, पुर्नावृत्ति, भ्रमण, निरीक्षण, दीक्षा, एवं प्रवचन विधियों को महत्व प्रदान करता है।
10. बौद्ध शिक्षा दर्शन में विद्यार्थियों को मठों में रहकर शिक्षा प्राप्त करने पर बल देता है
11. बौद्ध शिक्षा दर्शन नैतिक अनुशासन पर बल देता है।

सन्दर्भग्रन्थ सूची

1. शर्मा प्रो0 रत्नचन्द्र व कुल श्रेष्ठ महेन्द्र : विश्व के महान दार्शनिक, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ– 50.

1.पाण्डेय संगमलाल : भारतीय दर्शन का सर्वेक्षण, नालन्दा देवनागरी पाली ग्रन्थ माला, पृष्ठ–158.

2.हन्ह तिक न्यात:जहाँ चरण पडे गौतम के, 'हिंद पॉकेट बुक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 122

3.हन्ह तिक न्यात,:जहाँ चरण पडे गौतम के, 'हिंद पॉकेट बुक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 124

4.मिश्रा कमलराजेन्द्र:चन्द्र प्रज्ञप्ति, बंगाल प्रकाशन, पृष्ठ– 91.

5.मिश्रा कमलराजेन्द्र : चन्द्र प्रज्ञप्ति, बंगाल प्रकाशन, पृष्ठ– 95.

6.शर्माकैलाश चन्द्र : धर्मामृत, ज्ञानपीठप्रकाशन, वाराणासी, पृ. 312-

7.भिक्षु जगदीश : खुद्दकनिकाय,बौद्ध शिक्षा परिषद, लखनऊ प्रकाशन, भाग–1, पृष्ठ–315.

8.वही, पृष्ठ– 229.

9.उपाध्याय बल्देव :बौद्ध दर्शन की मीमांसा, राजहंस प्रकाशन दिल्ली, पृष्ठ– 39

10.शर्मा प्रो0 आई0 सी0 : इथिकल फिलॉसफीज आफ इण्डिया, पृष्ठ– 168–169.

11.शर्मा आई0 सी0: इथिकल फिलॉसिफीज़ ऑफ इण्डिया, पृष्ठ– 181.

12.'आर्य', मोहन लाल, ''शैक्षिक प्रषासन एवं प्रबन्धन'', आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ, 2014।

13.'आर्य', मोहन लाल, ''शैक्षिक प्रषासन एवं प्रबन्ध'', आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ, 2016।

14.'आर्य', मोहन लाल, ''अधिगम और षिक्षण'', आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ, 2017।

15.'आर्य', मोहन लाल, ''ज्ञान और पाठ्यक्रम'', आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ, 2017।

16.'आर्य', मोहन लाल, ''अधिगम के लिए आंकलन'', आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ, 2017।

17.'आर्य', मोहन लाल, ''षिक्षा के ऐतिहासिक एवं राजनीतिक परिप्रेक्ष्य'', आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ, 2017।

18.'आर्य', मोहन लाल, 'पाण्डे' महेन्द्र प्रसाद, कौर भूपेन्द्र एवं गोला राजकुमारी, ''सामाजिक विज्ञान का शिक्षणशास्त्र'', आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ, 2017।

19.'आर्य', मोहन लाल, ''षिक्षा के ऐतिहासिक, राजनीतिक एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य'', आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ, 2018।